समझदारी और परिपक्वता उम्र की मोहताज नहीं

न्यायाधीश नगेन्द्र कुमार जैन
(पूर्व मुख्य न्यायाधिपति मद्रास एवं कर्नाटक उच्च न्यायालय)

‘‘समझदारी और परिपक्वता आयु के अधीन नहीं होती, धैर्य और आत्मचिंतन द्वारा इसके कपाट किसी भी आयु में खोले जा सकते हैं।”

मनुष्य के जीवन में उम्र बढ़ना एक स्वाभाविक प्रक्रिया है, लेकिन उम्र बढ़ ने और समझ बढ़ने में बहुत बड़ा अंतर है। बाल सफेद हो जाना अनुभव का संकेत हो सकता है, परंतु, जीवन की सच्ची परिपक्वता इस बात से तय होती है कि हमने अपने अनुभवों से क्या सीखा। कई बार कम उम्र का व्यक्ति भी ऐसी समझदारी दिखा देता है, जो किसी बुजुर्ग दुर्ग में वर्षों बाद भी दिखाई नहीं देती। वहीं कभी–कभी बहुत अधिक उम्र होने के बावजूद मनुष्य अपनी जिद, अहंकार, क्रोध और पूर्वाग्रहों से बाहर नहीं निकल पाता। जबकि प्रत्येक मनुष्य में आत्मा है और शरीर नश्वर है।

वास्तव में परिपक्वता चेहरे की झुर्रियों में नहीं, विचारों की गहराई में दिखाई देती है। यह उम्र की देन नहीं, बल्कि अनुभवों को समझने, गलतियों को स्वीकार करने और स्वयं को सुधारने की क्षमता का परिणाम है।

धैर्य–परिपक्वता की पहली सीढ़ीः

आज के तेज जीवन में सबसे अधिक कमी यदि किसी चीज की है तो वह है धैर्य। छोटी सी बात पर क्रोधित होना, तुरंत प्रतिक्रिया देना, बिना पूरी बात जाने निर्णय कुर लेना और अपनी बात को ही अंतिम सत्य मान लेना – ये सब अपरिपक्वता के लक्षण है।

परिपक्व व्यक्ति जानता है कि हर परिस्थिति का उत्तर तुरंत देना आवश्यक नहीं होता। कभी–कभी चुप रहना बुद्धिमानी है और समय को अपना काम करने देना भी ।

धैर्य हमें सिखाता है कि सामने वाला गलत हो तो भी हम अपना संतुलन न खोएँ। हर विवाद जीतना आवश्यक नहीं और हर बात का जवाब देना भी जरूरी नहीं। जीवन में कुछ बातें समय पर छोड़ देने से स्वयं सुलझ जाती है।

आत्मचिंतन – अपने भीतर झाँकने का साहस :

दूसरों की गलतियाँ देखना बहुत आसान है, लेकिन अपनी गलती स्वीकार करना सबसे कठिन। हम अक्सर अपने दुःखों के लिए परिस्थितियों,

परिवार, समाज और दूसरों को जिम्मेदार ठहराते हैं, लेकिन बहुत कम लोग स्वयं से पूछते हैं– ‘‘इस परिस्थिति में मेरी भी कोई गलती थी क्या ?’’ यहीं से आत्मचिंतन की शुरुआत होती है।

जिस दिन मनुष्य दूसरों का मूल्यांकन करने से पहले स्वयं का मूल्यांकन करना शुरू कर देता है, उसी दिन उसके भीतर परिपक्वता का जन्म होने लगता है।

आत्मचिंतन का अर्थ स्वयं को दोषी ठहराना नहीं, बल्कि स्वयं को समझना है। अपनी कमियों को पहचानना, अपनी भूलों से सीखना और भविष्य में उन्हें दोहराने से बचना ही सच्चा आत्मविकास है।

अनुभव सबको मिलता है, सीरख कुछ ही लेते हैंः

अनुभव देता है– किसी को रिश्तों के माध्यम से, किसी को जीवन हर व्यक्ति को अनुभव संघर्षों से, किसी को असफलताओं से और किसी को परिस्थितियों की ठोकरों से । लेकिन अनुभव तभी ज्ञान बनता है, जब हम उससे सीखते हैं।

एक व्यक्ति बार बार धोखा खाकर भी वहीं गलती दोहराता रहे तो केवल उम्र बढी है, समझ नहीं। दूसरा व्यक्ति एक छोटी–सी गलती से भी बड़ी सीख ले ले तो वह वास्तव में परिपक्व ह हो रहा है।

इसलिए जीवन में यह मायने नहीं रखता कि हमने कितने वर्ष जी लिए, महत्वपूर्ण यह है कि उन वर्षों ने हमें कितना बेहतर इंसान बनाया।

परिपक्वता का अर्थ हर बात सह लेना नहींः

कई लोग समझदारी का अर्थ चुप रहना और हर अन्याय सह लेगा समझते हैं। ऐसा नहीं है। परिपक्व व्यक्ति यह जानता है कि कहाँ बोलना है, कितना बोलना है और कही मोन रहना है। वह अपनी मर्यादा बनाए रखते हुए अपनी बात कह सकता है। वह क्रोध में निर्णय नहीं लेता, लेकिन आवश्यकता पड़ने पर दृढ निर्णय लेने हो भी पीछे नहीं हटता ।

वह बदला लेने की बजाय स्वयं को बेहतर बनाने में विश्वास करता है। वह हर रिश्ते को बचाने की कोशिश करता है, लेकिन अपने आत्मसम्मान की कीमत पर नही ।

उम्र छोटी हो सकती है, सोच बड़ी हो सकती हैः

हमारे समाज में अक्सर यह मान लिया जाता है कि बड़ा व्यक्ति ही अधिक समझदार होगा। सम्मान करना निश्चित रूप से आवश्यक है, लेकिन समझदारी का संबंध केवल उम्र से नहीं होता। कभी किसी छोटे

बच्चे की सहज बात भी बड़े–बड़े सिद्धांतो से अधिक गहरी सीरत दे जाती है। कोई युवा कठिन परिस्थिति मैं जिस धैर्य और विवेक का परिचय देता है, वह कई अनुभवी लोगों के लिए भी प्रेरणा बन सकता है।

इसलिए किसी व्यक्ति को केवल उसकी उम्र से नहीं, बल्कि उसके व्यवहार, विचार, निर्णय और दूसरों के प्रति उसके दृष्टिकोण से परखना चाहिए।

रिश्तों में परिपक्वता की सबसे बड़ी परीक्षा :

मनुष्य की वास्तविक परिपक्वता उसके रिश्तों में दिखाई देती है। जब कोई अपना हमारी अपेक्षा के अनुसार व्यवहार न करे, तब हम कैसा व्यवहार करते हैं? जब कोई हमारी बात न माने, तव हमारा धैर्य कितना रहता है? जब कोई गलती करे, तब हम उसे अपमानित करते हैं या समझाने का प्रयास करते हैं? परिपक्व व्यक्ति समझता है कि रिश्ते तर्क से कम और समझ से अधिक चलते हैं। हर बात में सही साबित होना रिश्ते को मजबूत नहीं करता। कभी–कभी रिश्ते को बचाने के लिए अपनी बात छोड़ देना भी बहुत बड़ी समझदारी होती हैं। लेकिन इसका अर्थ यह भी नहीं कि गलत को सही मान लिया जाए। परिपननता हमें सत्य और संबंधो के बीच संतुलन बनाना सिखाती है।

परिपक्वता कब आती है ?

जब मनुष्य यह समझने लगता है कि

- हर बात का उत्तर देना जरूरी नहीं है।
- हर व्यक्ति को बदलना हमारे हाथ में नहीं है।
- हर बहस जीतना आवश्यक नहीं है।
- हर गलती के लिए दूसरों को दोष देना उचित नहीं है।
- बीता हुआ समय वापस नहीं आता ।
- धन से अधिक मूल्यवान शांति है।
- अहंकार से बड़ा कोई बोझ नहीं।
- क्षमा करना कमजोरी नहीं, मानसिक शक्ति है।
- और सबसे महत्वपूर्ण–स्वयं को बदलना ही सबसे बड़ा परिवर्तन हैं।

जीवन का सबसे बड़ा विश्वविद्यालय :

जीवन स्वयं एक ऐसा विश्वविद्यालय है, जहाँ हर दिन एक नया पाठ पढ़ाया जाता है सुख हमें धन्यवाद करना सिखाता है, दुख हमें मजबूत बनाता है, असफलता हमें सुधारती है, सफलता हमें विनम्र रहना सिखाती है और रिश्ते हमें मनुष्य होने का अर्थ समझाते हैं। जो व्यक्ति हर

परिस्थिति से कुछ सीखता है, वह उम्र की परवाह किए बिना परिपक्व होता जाता है।

इसलिए किसी की उम्र देखकर यह निर्णय नहीं करना चाहिए कि वह कितना समझदार है। किसी की वास्तविक उम्र उसके जन्म प्रमाण–पत्र में नहीं, उसके विचारों में दिखाई देती है।

अंततः यही कहा जा सकता है कि बुढ़ापा शरीर की अवस्था है, जबकि परिपक्वता मन की अवस्था । शरीर समय के साथ बूढा होता है, लेकिन मनुष्य चाहे तो हर उम्र मे अपने विचारों को नया, निर्मल और विवेकपूर्ण बना सकता है।

जरूरत केवल इतनी है कि हम कभी–कभी संसार को देखने से पहले अपने भीतर झाँके, प्रतिक्रिया देने से पहले थोड़ा ठहरें और निर्णय लेने से पहले आत्म चिंतन करें ।

क्योंकि – उम्र वर्षों से बढ़ती है,
अनुभव घटनाओं से बढ़ता है,
ज्ञान सीखने से बढ़ता है,
लेकिन समझदारी और परिपक्वता– धैर्य, आत्मचिंतन और अपने भीतर सुधार लाने से बढ़ती है।

जिस दिन मनुष्य स्वयं को समझने लगता है, उसी दिन से वह वास्तव में’ जीवन को समझना शुरु कर देता है।

———